ओम् शान्ति 15-7-10 मधुबन

''टीचर्स बहिनों के दूसरे ग्रुप में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश''

– गुल्जार दादी

आज विशेष भट्ठी वालों की याद-प्यार लेके बापदादा के पास पहुँची। तो क्या देखा कि मेरे से पहले ही आप भट्ठी के साथी सब बाबा के पास वतन में पहुँचे हुए थे और बैठे हुए थे। जैसे सारा संगठन ही प्रभु मिलन की खुशी में लवलीन थे, यह दृश्य तो ऐसा सुन्दर लग रहा था जो दिल से निकला वाह बाबा वाह! वाह लक्की सितारे वाह! मैं भी दृष्टि में समाते हुए बाबा के सम्मुख पहुँच गई। सब बहनें उत्साह से बोली गुल्ज़ार बहन आज बाबा ने बहुत विचित्र अनुभव में खो दिया, समा लिया। बाबा बोले बच्ची, यह ग्रुप तो सेवा के साथी गुरुभाई, लाडले हैं ना! तो बाबा ने पहले ही बुला लिया। दृश्य भी ऐसा सुन्दर लग रहा था जैसे फरिश्तों का संगठन वतन में पहुँच गया है। संगठन का रूप ऐसे लग रहा था जैसे चार अर्ध चन्द्रमां के रूप में, चार मालायें बाबा के गले में पड़ी हुई हैं और बापदादा भी हर एक को दृष्टि द्वारा ऐसे पावर दे रहे थे जो हर एक स्नेह और शक्ति रूप में लवलीन थे। कुछ समय बाद बाबा बोले, मेरे दिल के दुलारे, दिल के प्यारे बच्चे, सदा समान साक्षी, साथीपन की सीट पर स्थित हो सब खेल देखते हो ना? सदा अशरीरी, फरिश्ता रूपधारी बन विश्व के वायुमण्डल को शक्तिशाली, शान्तिशाली बना रहे हो ना? यही सेवा आप निमित्त बने हुए बच्चों का विशेष कार्य है। सब बहुत ही सुन सुन करके मुस्करा रहे थे और दिल से, नयनों से रेस्पॉन्ड दे रहे थे। जी हाजिर, जी हाजिर हजूर। उसके बाद बाबा बोले, बापदादा तो इस समय बच्चों को इशारा दे रहे हैं कि अब बाहर की हलचल और आपकी अचल स्थिति का खेल चलना ही है। आपके निर्भय, निरव्यर्थ संकल्प का खेल चलना ही है। आप तो कल्प-कल्प के निश्चय बुद्धि, विजयी रत्न हो ही। आपके आगे कैसी भी बातें आयें लेकिन आपके दिल में, मन में, कर्म में बाप याद है। बाप और आप सदा कम्बाइन्ड हैं। कभी अकेले नहीं रहना। अकेले देख माया अपना वायब्रेशन फैलाती है। अपना वायदा याद करो - साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे.. इस दृढ़ सकल्प में एक परसेन्ट भी कम ना हो तो बापदादा सदा छत्रछाया बन सहज सेफ कर देगा। इसके बाद बापदादा ने बहुत पावरफुल दृष्टि दी और सबके ऊपर वरदान का हाथ घुमाया। उसके बाद बाबा ने अपनी प्यारी जानकी दादी के साथ सब दादियों को और निमित्त बनी हुई दीदियों को भी याद किया और सबको बाहों के हार में समा लिया। सबके साथ मोहिनी बहन, मुन्नी बहन, ईशु बहन को भी इमर्ज किया और कहा जनक बच्ची को और सर्व साथियों को भी उमंग-उत्साह बहुत है। बस, अब के अब सब परिवर्तन हो विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करें। अब की भट्ठियों का स्लोगन ही है ''परिवर्तन होना ही है''। ऐसे कहते सबको दृष्टि देते कहा पक्का वायदा है ना? होना ही है। और सबको अपनी दृष्टि में समा दिया। सब बड़े स्नेह की स्थिति में लवलीन थे। उसके बाद बाबा ने दादियों के साथियों को भी याद किया और कहा कि सेवा बहुत दिल से करते, सबको बहलाते खुश करते आगे बढ़ाते। इस सेवाधारी संगठन में इन्हों का भी पार्ट है। कुछ समय बाद बाबा बोले, दिल खुश, उमंग-उत्साह वाले बच्चे आये हैं तो इन्हों को सौगात में क्या देंगे? बस बाबा का कहना और सौगात का इमर्ज होना। तो क्या देखा! बहुत से कंगन थे। हर कंगन में बीच-बीच में 8 बड़े हीरे थे, जिसमें 8 शक्तियां लगी हुई थी। बाबा बोले, यह राखी बाबा आपको पहना रहा है। सौगात तो याद सहज आयेगी। यह विजय का कंगन है, कुछ भी हो तो यह कंगन विजय का यादगार है। ऐसे कहते सबको अपनी दृष्टि में समा लिया, सब स्थूल वतन में पहुँच गये। अच्छा।

ओम् शान्ति।